P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* (Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

वृद्ध व्यक्ति : बढ़ता एकाकीपन का दायरा

नवल सिंह राजपूत
सहायक आचार्य,
उदयपुर स्कूल ऑफ सोशल वर्क,
जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय,
उदयपुर

सारांश

परिवार की आर्थिक स्थिति का परिवार की संरचना व अन्तःक्रिया पर सीधा प्रभाव पड़ता है। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी होने पर वृद्ध व सन्तानों के मध्य तनाव को अपेक्षाकृत कम देखा गया है, वही निम्नवर्गीय परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण सन्तानों व वृद्ध पीढ़ी में तनाव अधिक पाया गया है। ग्रामीण व जनजातीय क्षेत्रों के अधिकांश वृद्धों से अभी भी कार्य की अपेक्षा की जाती है। अधिकांश वृद्धों को विभिन्न शारीरिक समस्याओं से ग्रस्त होने पर भी, बकरीपालन व कृषि से सम्बन्धित कार्यों को मजबूरन करना पड़ रहा है। परिवार में स्त्री तथा पुरूष दोनों को, परिवार चलाने के लिये रोजगार या रोजगार की तलाश में परिवार से दूर जाना पड़ता है, जिस कारण वृद्धों की परिवार के सदस्यों के साथ वार्तालाप कभी–कभी या अवकाश के दिन ही हो पाती है। फलस्वरूप एकाकीपन की समस्या से वृद्ध ग्रसित होते जा रहे हैं। लेकिन इस एकाकीपन का कारण या दोष पूर्णतया आधुनिक परिवार पर मढ़ना न्यायोचित नहीं होगा क्योंकि वर्तमान समय में शिक्षा व जीवन व्यापन की बढ़ती लागत व रोजगार की तलाश में स्थानान्तरण या प्रवास एक आवश्यकता ही नहीं अपितु एक मजबूरी बन गई है, ऐसे में अनायास ही वृद्ध व्यक्तियों का अकेला छुटना स्वाभाविक भी माना जा रहा है। समायोजन न करने की वृद्व व्यक्तियों की आदत भी कुछ हद तक उनके एकाकीपन एवं बच्चों द्वारा उपेक्षा के लिए जिम्मेदार है। पुत्र व पुत्र–वधू द्वारा आत्मनिर्भर बनने, स्वतंत्रता की चाहत व हस्तक्षेप रहित जीवन शैली को प्राथमिकता देने के कारण वृद्ध अपने आपको उपेक्षित महसूस कर रहे हैं। वृद्ध तथा युवा पीढ़ी की मानसिकता में अन्तर आने के कारण एक दूसरे के प्रति अविश्वास व तनाव उत्पन्न होता है। औद्योगिकरण, नगरीयकरण व आधुनिकवाद ने दोनों पीढ़ीयों के बीच दूरियों को ओर भी बढ़ाया है।

मुख्य शब्द : समता, समानता, स्वतन्त्रता, एकाकीपन, वृद्ध, क्षमता, समस्या, विकास।

प्रस्तावना

कोई भी व्यक्ति जीवन में अपनी आवष्यकताओं को स्वयं पूर्ण नहीं कर सकता है। उसे दूसरे व्यक्तियों या समूहों पर आश्रित रहना ही होता है। परिणामस्वरुप परस्पर होने वाली अन्तःक्रियाएं सामाजिक सम्बन्धों एवं व्यवहारों को विकसित करते हैं। व्यवहारों एवं सम्बन्धों के स्वरुप सामाजिक प्रस्थिति, आयु, लिंग, नातेदारी, जाति आदि पर निर्भर करते हैं। व्यक्ति की प्रस्थितियॉ प्रदत्त एवं अर्जित दोनो प्रकार की होती हैं। परम्परागत एवं प्राथमिक समूहों में प्रदत्त प्रस्थितियों का महत्व होता है जबकि वर्तमान आधुनिक समाज में अर्जित प्रस्थितियॉ महत्वपूर्ण होती है। आयु महत्वपूर्ण पक्ष है। बालक, युवा, प्रोढ़, एवं वृद्धावस्था में आयु के आधार पर विभिन्न स्थितियॉ देखी जा सकती है। बालपन व वृद्धावस्था की आयु में व्यक्ति सामान्यतः आश्रित के रुप में रहता है। वृद्धावस्था में आश्रितता अधिक कष्टदायक होती है। अपेक्षाएं और महत्वकाषाएं सम्बन्धों एवं व्यवहारों को अधिक प्रभावित करते हैं। संयुक्त परिवार में तो वृद्ध व्यक्ति के पास सत्ता होती थी। लेकिन एकाकी परिवारों में सत्ता का सीधा सम्बन्ध आय अर्जन से होने व अन्य सदस्यों पर आश्रितता के कारण वृद्ध व्यक्ति स्वयं को अधिक असहाय अनुभव कर रहा है। आधुनिकरण, औद्योगिकरण व नगरीकरण ने युवा व वृद्ध पीढ़ी की दूरीयों में एकाएक वृद्धि की है, जिसके परिणामस्वरूप कई वृद्ध दम्पतियों को नगर या गांव में अकेला रहना पड़ रहा है। वर्तमान समय में शिक्षा व जीवन व्यापन की बढ़ती लागत व रोजगार की तलाश में स्थानान्तरण एक आवश्यकता ही नहीं अपितु एक मजबूरी बन गई है, ऐसे में अनायास ही वृद्ध व्यक्तियों का अकेला छूटना स्वाभाविक भी माना जा रहा है। परिवार में वृद्ध व सदस्यों के मध्य जहा कभी विश्वास व स्नेह का सम्बन्ध था,

आज मामूली सी सम्पत्ति विवाद का कारण बन जाती है। आधुनिक विकास की ओर अग्रसर मेडिकल और स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान ,दवाईयॉ व प्रौधोगिकी ने मानव आयु में वृद्धि की हैं लेकिन संयुक्त परिवार की तरह सामाजिक सुरक्षा समाज में उपलब्ध नहीं की जा सकती है। नए परिवर्तित समाज में 'वद्धाश्रम ' (Old Homes) विकसित हो रहे हैं लेकिन वे पर्याप्त नहीं है और ना सबके लिए सम्भव है। मात्र उच्च या उच्च–मध्यम वर्ग के परिवार ही लाभ उठा सकते हैं। लेकिन सामाजिक दायरे व सम्बन्ध वहां (वद्धाश्रम में) नही हैं जिनमें व्यक्ति जीवन का अधिकांष समय गुजारता है। वर्तमान समय में एक और तो हमारा देश नवीन प्रौद्योगिकी तथ औद्योगीकरण के द्वारा विकास की ओर अग्रसर है तथा दूसरी ओर इन नवीन प्रौद्योगिकी व औद्योगीकरण का नकारात्मक प्रभाव परिवार व समाज पर पड़ रहा है। संयुक्त परिवारों का विघटन हो रहा है। नवीन प्रौद्योगिकी ने समाज को उत्पादक (युवा वर्ग) व अनुउत्पादक (वृद्ध एवं बच्चे) में विभाजित कर दिया है तथा समय के साथ इनकी दूरियां बढ़ती जा रही हैं। लेकिन साथ ही मनुष्य के जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में भी असंतुलन उत्पन्न हो गया है। आज के समय में जीवन जीने की शैली ही बदल गई है तथा इसके साथ वृद्धावस्था की निश्चितंता व सुकून भी गायब हो रहा है। सन्तानों द्वारा बेहतर जीवन की तलाश में, स्थानांतरण के कारण या पारिवारिक मतभेदों की वजह से वृद्ध व्यक्ति चाहे–अनचाहे पीछे छूट जाते हैं। अगर साथ रह भी रहे हैं तो भी नई पीढ़ी की महत्वाकांक्षाएं, आजीविकाएं, बच्चों को पालने के तरीके सब बदल गये हैं, जहां वृद्ध व्यक्तियों के अनुभवों व सुझावों का कोई विशेष स्थान नहीं है क्योंकि प्रौद्योगिकी और परिवर्तन की प्रक्रिया ने सांस्कृतिक सोच को भी बदल दिया है। समय के साथ यह समस्या और भी गंभीर बनती जा रही है। नयी प्रौद्योगिकी ने परिवार के परम्परागत सामाजिक ढांचे की नींव कमजोर कर दी है। जिसके कारण परिवार छोटे होते जा रहे हैं। परिवार एवं नातेदारी सदस्यों के मध्य दूरी बढ़ रही है तथा मनुष्य परिवार में होते हुए भी एकाकी जीवन व्यतीत कर रहा है। वर्तमान में परिवार के सदस्यों में से सबसे अधिक कष्टमय जीने वाला अगर कोई सदस्य है तो वह वृद्ध है। यह ऐसी अवस्था है, जहां वृद्ध व्यक्ति के शरीर की सक्रीयता कम होती चली जाती है तथा धीरे–धीरे शारीरिक अक्षमताएं बढ़ती जाती हैं। वृद्ध अपने शारीरिक अक्षमताओं से सामंजस्य नहीं कर पाता है। इस विपरीत परिस्थिति में संकट की स्थिति तब बनती हैं जब परिवार के सदस्य भी उसकी सहायता से बचते हैं या उनका व्यवहार चिड़चिड़ापन लिए होता है। ऐसी स्थिति में वृद्ध व्यक्ति अपने आपको ठगा सा अनुभव करते हैं। अतः इस समस्या की गम्भीरता को ध्यान में रखते हुए इस विषय पर अध्ययन किया हैं।

साहित्यावलोकन

इस क्षेत्र में हुए विभिन्न अध्ययनों का सार संक्षेप में अधोलिखित है–

एलन डी रॉस के अध्ययनानुसार एकाकी परिवारों में अभिभावकों व बच्चों के मध्य पारस्परिक संघर्ष अधिक पाये जाते हैं। इन पारिवारिक संघर्षो का मुख्य कारण पारिवारिक सांमजस्य की कमी और नित नई भूमिकाओं का उत्पन्न होना है। रॉस के अनुसार भारतीय संस्कृति में माता–पिता अपने बच्चों को परिवार से स्वतंत्र होने की शिक्षा नहीं देते हैं। वर्तमान में युवाओं के रोजगार की तलाश में शहर की और जाने से युवा, संयुक्त परिवार से स्वतंत्र होने की प्रक्रिया में हैं। युवा अपने व्यक्तित्व विकास के लिये मूल स्थान छोड़ देते हैं जबकि माता पिता स्वयं को इसके लिये तैयार नहीं कर पाते हैं। टनस्टॉल के अनुसार वृद्धावस्था में आयु वृद्धि के साथ साथ व्यक्ति अपने आपको समाज से अलग महसूस करने लगता है। सेवानिवृति के पश्चात् सहकर्मियों से अलग होना पड़ता है तथा साथ ही अपने घनिष्ठ मित्रों तथा रिश्तेदारों की मृत्यु, व्यक्ति को एकाकी जीवन की तरफ धकेलती है। आशारानी व्होरा के अनुसार भारत में सन् 2025 तक 60 वर्ष से उपर के स्त्री –पुरूषों की संख्या 14 करोड़ 60 लाख तक हो जाएगी, निश्चय ही तब समाज में वृद्धों का बहुमत होगा। इसमें एक और समाज के लोगों को उनका लाभ मिल सकेगा तथा दूसरी और वृद्धों की इस नई उभरती सामाजिक समस्याओं में भी उत्तरोतर वृद्धि होगी। आर्थिक असुरक्षा, स्वास्थ्य की शिथिलता ओर अकेलेपन का अहसास वृद्धावस्था की तीन मुख्य समस्याएं हैं। आर.बी.एल. गर्ग के अध्ययन के अनुसार देश के अधिकांश बूढ़े उपेक्षित और कष्ट साध्य जीवन जी रहे हैं। वृद्धों की उपेक्षा के अनेक कारण बताए गये हैं। उनमें मुख्य जीवनयापन की बढती हुई लागत, दो पीढ़ियों की व्यापक बढ़ती खाई, नैतिक मूल्यों का तेजी से हो रहा पतन, युवा पीढ़ी की स्वतंत्रतापूर्वक अलग रहने की चाह, उपेक्षा के शिकार वृद्ध मनोदशा, अस्थि दुर्बलता, गठिया, उच्च रक्तचाप आदि रोगों की चपेट में आकर वृद्ध न केवल गतिहीन हो जाते हैं अपितु एकाकी व दयनीय भी हो जाते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य वृद्धों की एकाकी जीवन से सम्बन्धित समस्याओं के कारणों एवं परिणामों को जानना है।

अध्ययन निदर्शन

किसी भी अनुसंधान को सफल बनाने तथा अनुसन्धान के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु उपर्युक्त विधि का चयन करना एक महत्वपूर्ण आधार है। शोधकर्ता ने अध्ययन के लिए बिना लिंग भेद के आधार पर कुल 300 उत्तरदाताओं के परिवारों का चयन उद्देश्यात्मक निदर्शन विधि द्वारा किया गया है। उदयपुर जिले के नगरीय, ग्रामीण व जनजातीय क्षेत्रों से समान संख्या में, प्रत्येक से 100 परिवार के उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यात्मक विधि का अंग है।

निष्कर्ष

बदलते परिवेश में रोजगार व शिक्षा के कारण परिवार के अधिकांश सदस्य व्यस्त रहते हैं और उन्हें बाहर जाना होता है। जिसके फलस्वरूप वृद्धजन से वार्तालाप के लिये समय का अभाव रहता है। परिवार में आपसी तनाव व उपेक्षित व्यवहार भी वृद्धों को एकाकी जीवन व्यतीत करने के लिये बाध्य करता है। युवाओं द्वारा स्वतंत्रता की चाह व हस्तक्षेप रहित जीवन शैली को

प्राथमिकता देने के कारण भी वृद्ध अकेले रह गये हैं। लेकिन इस एकाकीपन का कारण या दोष पूर्णतया आधुनिक परिवार पर मढ़ना न्यायोचित नहीं होगा क्योंकि वर्तमान समय में शिक्षा व जीवन–यापन की बढ़ती लागत व रोजगार की तलाश में देशान्तर गमन एक आवश्यकता ही नहीं अपितु एक मजबूरी बन गई है, ऐसे में अनायास ही वृद्ध व्यक्तियों का अकेला छूटना स्वाभाविक भी माना जा रहा है। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि परिवार की आर्थिक स्थिति का परिवार की संरचना व अन्तःक्रिया पर सीधा प्रभाव पड़ता है। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी होने पर वृद्ध व सन्तानों के मध्य तनाव को अपेक्षाकृत कम देखा गया है, वही निम्नवर्गीय परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण सन्तानों व वृद्ध पीढ़ी में तनाव अधिक पाया गया है। ग्रामीण व जनजातीय क्षेत्रों के अधिकांश वृद्धों से अभी भी कार्य की अपेक्षा की जाती है। अधिकांश वृद्ध बकरीपालन व कृषि से सम्बन्धित कार्यों को विभिन्न शारीरिक समस्याओं से ग्रस्त होने पर भी मजबूरन करना पड़ रहा है। परिवार में स्त्री तथा पुरूष दोनों को परिवार चलाने के लिये रोजगार या रोजगार की तलाश में परिवार से दूर जाना पड़ता है, जिस कारण वृद्धों की परिवार के सदस्यों के साथ वार्तालाप कभी–कभी या अवकाश के दिन हो पाती है फलस्वरूप एकाकीपन की समस्या से वृद्ध ग्रसित होते जा रहे हैं। लेकिन इस एकाकीपन का कारण या दोष पूर्णतया आधुनिक परिवार पर मढ़ना न्यायोचित नहीं होगा क्योंकि वर्तमान समय में शिक्षा व जीवन व्यापन की बढ़ती लागत व रोजगार की तलाश में स्थानान्तरण या प्रवास एक आवश्यकता ही नहीं अपितु एक मजबूरी बन गई है, ऐसे में अनायास ही वृद्ध व्यक्तियों का अकेला छुटना स्वाभाविक भी माना जा रहा है। समायोजन न करने की वृद्व व्यक्तियों की आदत भी कुछ हद तक उनके एकाकीपन एवं बच्चों द्वारा उपेक्षा के लिए जिम्मेदार है। पुत्र व पुत्र–वधू द्वारा आत्मनिर्भर बनने, स्वतंत्रता की चाहत व हस्तक्षेप रहित जीवन शैली को प्राथमिकता देने के कारण वृद्ध अपने आपको उपेक्षित महसूस कर रहे हैं। वृद्ध तथा युवा पीढ़ी की मानसिकता में अन्तर आने के कारण एक दूसरे के प्रति अविश्वास व तनाव उत्पन्न होता है। औद्योगिकरण, नगरीकरण व आधुनिकवाद ने दोनों पीढ़ीयों के बीच दूरियों को बढ़ाया है। आधुनिक परिवार व्यवस्था व्यक्तिवादिता पर आधरित है। इसमें परिवार के सदस्य अपनी पत्नी और बच्चों के हित को प्राथमिकता देते हैं। अन्य निकट सम्बधियों की चिन्ता नहीं करना चाहता अथवा बचता है। धीरे–धीरे सामाजिक सम्बन्धों में दूरियां बढती जाती हैं और यही कारण है कि परिवार और उसके सदस्य स्वकेन्द्रित होते जा रहे हैं। परिवार के सदस्य उन्हीं बातों या मुद्दों पर ध्यान देते है जो उनके लिये लाभकारी हैं अन्यथा बाकी सभी मुद्दों व बातों को उपेक्षित कर दिया जाता है। वृद्धों से अधिकांश धार्मिक व रिश्तेदारी के ही मुद्दों पर निर्णय लिया जाता है। वृद्ध अपने आपको परिवार में उपेक्षित अनुभव कर रहे है।

संदर्भ ग्रथं सूची

1. *Ranjan, Rajiv., "Boojargon ke liye Pension Yojana", Samaj Kalyan, C.S.W.B., Ministry of Human Resource and Development, Go I, April 2004, pp 11*
2. *Ramamurti, P.V., Research and Development Journal, Help Age India, Vol-9, No-2 May-2003, pp-5*
3. *Bohra, Asharani.,"80 par ki umar ek anvention, ek servektion" Samaj Kalyan, C.S.W.B., Ministry of Human Resource and Development, GoI, April 2004, pp 32*
4. *Garg, R.B.L., "Saarthak Vradhavastha ke Aayaam" Samaj Kalyan, C.S.W.B., Ministry of Human Resource Ministry of Human Resource and Development, GoI April 2004, pp 30-31*
5. *Kubde, B.V., "Bharat mein Vradha jano ka Kalyan" Samaj Kalyan, C.S.W.B., Ministry of Human Resource and Development, Go I, April 2004, pp 37*
6. *State Economic Review.,"Current News", Research and Development Journal, Help Age India, Vol-10, No.-1 Jan.-2004, pp-34*
7. *Edwin, Driver."Family Structure and Socio-Economic Status in Central India", Sociological Bulletin, Vol.-11, Nos. -1&2, 1962, pp.112-120*
8. *Ross, Allen. D., The Hindu Family in its Urban Setting, Toronto University Press, Toronto, 1961*
9. *Gould, H.A., "The True Dimensions of structural changes in an Indian kinship system," in Milton Singer & Bernard C. Cohen (Eds.) Structure and Change in Indian Society, Aldine, Chicago, 1968, pp.-413-21*